514
H
MICROFILM

891.431
G 959K

S
1911

✽ वन्देमातरम् ✽ 153

क्रान्ति-की-झलक,

कसली है कमर अबतो, कुछ करके दिखा देंगे।
आज़ाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे॥
कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो यह है।
रखदे कोई ज़रा सी, ख़ाके वतन कफ़न में॥

(शहीद अशफ़ाक़)

IMPERIAL RECORD RECEIVED 25 AUG 1930 DEPARTMENT

प्रकाशक व सम्पादक—
के॰ एल॰ गुप्त

प्रथमबार १००० | सन् १९३० ई० | मूल्य -)

क्रान्ति की जय   क्रान्ति की जय

कांग्रेस स्वयं-सेवक दल के गीत

बन्देमातरम्

सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम् ।
शस्य श्यामलां मातरम् ॥ बन्देमातरम् ।
शुभ्र ज्योतिस्नाम् पुलकित यामिनीम् ।
फुल्ल कुसुमित द्रुमेदल शोभिनीम् ॥
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदाम बरदाम मातरम् ॥ बन्दे...... ।
त्रिंश कोटि कंठ कल कल निनाद कराले ।
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खर कर वाले ॥
के बोले माँ तुमि अबले ।
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम् ॥
रिपुदल वारिणीम, मातरम् । बन्दे......।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम भूषिताम ।
धरणीम भरणीम, मातरम् । बन्दे......।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 514
Date 13.12.71
GOVT OF INDIA

झंडा प्रार्थना

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा । झंडा ऊँचा रहे हमारा ॥
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला ।
वीरों को हर्षाने वाला । मातृभूमि का तन मन सारा ॥ झंडा० ॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में ॥

कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ॥झंडा०
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारतमाता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥झंडा०
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा। झंडा०
इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए।
विश्व विजय करके दिखलाए, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥झंडा०

प्रार्थना

रसिया-अब कीजै राज सुराज, अहो प्रभु भारत में ॥ टेक ॥
बहुत कष्ट पर कष्ट उठाये, सकल पदारथ हम छिनवाये।
विदेशियों ने त्रास दिखाये, तब प्रभु शरण तिहारी आये।
रखो लाज महाराज, अहो प्रभु भारत में ॥ अब कीजै ॥ १ ॥
स्वतंत्रता देवी के दर्शन, अब तो जल्द करादो भगवन्।
शुद्ध चित्त एकाग्रह कर मन, करें सहर्ष खड़े आवाहन ॥
सेवक सकल समाज, अहो प्रभु भारत में ॥ अब कीजै० ॥२॥
करें बहुत अन्याय अधर्मी, फैलावें दुष्टता कुकर्मी।
भारत सब कर दिया विधर्मी, कहें न्याय की लावें गर्मी ॥
नौकरशाही आज, अहो प्रभु भारत में ॥ अब कीजै० ॥३॥
मिटे राज जल्दी शैतानी, सुधर जांय सारे अज्ञानी।
"शर्मा जलेसरी" की है बानी, जगदीश्वर को बात बनानी
रहें न हम कङ्गाल, अहो प्रभु भारत में ॥ अब० ॥ ४ ॥

मरते मरते

है जो बिगड़ी वो बना जायँगे मरते मरते ।
देश की शान दिखा जायँगे मरते मरते ॥१॥
दुश्मनों को भी मिटा जायँगे मरते मरते ।
हाथ मक़तल में दिखा जायँगे मरते मरते ॥२॥
न डरे हैं न डरेंगे सितम औ ज़ोर से हम ।
वीरता अपनी दिखा जायँगे मरते मरते ॥३॥
जी न छोड़ेंगे कभी देश से उलफ़त है जिन्हें ।
स्वराज्य करके दिखा जायँगे मरते मरते ॥४॥
बेनिशां होके निशां अपना रहेगा बाक़ी ।
चश्मे क़ातिल में समा जायँगे मरते मरते ॥५॥
कौन कहता है कि हम क़त्ल के दिन झिझकेंगे ।
नीचा दुश्मन को दिखा जायँगे मरते मरते ॥६॥
मेरी हस्ती को मिटाना है असम्भव ऐ 'दास' ।
सैकड़ों लाल बना जायँगे मरते मरते ॥७॥

हमारा भारत

हमारा हक़ है हमारी दौलत किसी के बाबा का ज़र नहीं है ।
है मुल्क भारत वतन हमारा किसीकी खालाका घर नहीं है ॥ह०
हुए हैं इसमें रहे हैं इसमें, बने हैं इसमें मिलेंगे इसमें ।
है खाक इसकी ये जिस्म सारा मिलादो इसमें फ़िकर नहीं है॥ ह०

हमारे घर को जला के तापा, दुखाके दिल को हंसा किये जो।
उन्हींकी थीं सबकजीकी चालें, जिन्हेंकीअब यहां गुज़र नहीं है॥ह०
अभी तलक हम सिसक रहे थे, कड़ी २ चोटें खाके दिल पर।
पर अब ज़माना सिखा रहा है, कि आह में कुछ असर नहीं है॥ह०
अब हम सहारा बने हैं अपना, दे डालो हमको जो है हमारा।
जो वक्त गुज़रा गुजर चुका है, हमें जरा अब खबर नहीं है॥ह०
हमारी शादीको अपना मातम, अगर समझलें तो क्या करें हम।
फ़क्र गुलजार हैफ़ उसका, कि आंख हैं पर नज़र नहीं है॥ह०

भगतसिंह का राग

डरे न कुछ भी जहां की चलाचली से हम।
गिरा के भागे न बम् भी असम्बली से हम॥
उड़ाये फिरता था हमको खयाले मुस्तक़बिल।
कि बैठ सकते न थे दिलकी बेकली से हम॥
हैं इन्किलाब की कुरबानगाह पर चढ़ते।
कि प्यार करते हैं ऐसी महाबली से हम॥
जो जी में आये तेरे शौक सुनाये जा।
कि तैश खाते नहीं हैं कटी जली से हम॥
न हो तू चीं ब जबीं, त्योरियों पर डाल न बल।
चले चले ओ सितमगर तेरी गली से हम॥

आवाहन

कसली है कमर अबतो कुछ करके दिखायेंगे।
आज़ाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे॥

हटने के नहीं पीछे डरकर कभी जुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बेशस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चरखे का।
चरखे से जमीं को हम तो चर्ख गुंजा देंगे॥
परवा नहीं कुछ दम की गमकी नहीं मातम की।
है जान हथेली पर एक दम में गंवा देंगे॥
उफ़ तक भी जुबां से हम हरगिज़ न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे॥
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका।
चलवाओ गन मशीनें हम सीना अड़ा देंगे॥
दिलवाओ हमें फांसी ऐलान ये कहते हैं।
खूं से ही शहीदों के हम फ़ौज बना देंगे॥
मुसाफ़िर जो 'अंडमन' के तू ने बनाये ज़ालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे॥

सरकार से असहयोग करदो

इस गवर्नमेंट से हरबल में असहयोग करो।
बनो स्वयम् स्वतंत्र और स्वराज्य भोग करो॥
वीर भारत के सपूतो तुम्हें भगवान क़सम।
जाति सम्मान क़सम धर्म व ईमान क़सम॥
शुद्ध जातीयता और देश के अभिमान क़सम।
आर्य्य को इष्ट मुसलमान को कुरान क़सम॥
शान्ति के साथ सभी मिलके असहयोग करो॥बनो०॥

शान्ति माला पै असहयोग का मन्तर वरलो।
इसकी सिद्धी में जो मरना पड़े तो तुम मरलो॥
यों तो सब मरते हैं तुम देश की सेवा करलो।
दोनों हाथों से सुयश कीर्ति की रोकड़ धरलो॥
कष्ट कितना ही मिले सह के असहयोग करो॥बनो०॥
लाख बहलाए कोई नेक नहीं तुम बहलो।
कोई कितना ही डराये न कभी तुम दहलो॥
कर्म भूमि में बरसती हो अगिन तो सहलो।
इष्ट मित्रों से भी ललकार के तुम यों कहलो॥
न्याय की राह पर सब आके असहयोग करो॥ बनो०॥
मानते वे नहीं तुमको तो न तुम भी मानो।
न उनके हो रहो मत उनको तुम अपना जानो॥
न्याय व्यवसाय औ सेवा से यही हठ ठानो।
नीति गांधी की ये सिर आंख के बल सनमानो॥
तन से मन धन से सकल ढंग से असहयोग करो॥बनो०॥

मैं जान दूंगा मगर जेल को न छोड़ूंगा

जो अहद बांधा है मरकर भी मैं न तोड़ूंगा।
मैं देश भक्ति का दामन कभी न छोड़ूंगा॥
यह जिस्म क्या है अगर रूह भी गुरेजां हो।
मौत के सामने आ आ के मुँह न मोड़ूंगा॥
गुलाम कौम को दूंगा बिहिश्ते आज़ादी।
ये जेल क्या है हिसारे जहां को तोड़ूंगा॥

हर एक जवान रज़ाकार बन के उठेगा।
मैं अपने खून के कतरे अगर निचोडूंगा॥
लगाके टक्करें इस गुम्बदे हिरासत को।
मैं इसके दर को गिराऊंगा सकफ़ फोडूंगा॥
यहीं से फैलेगी दुनियां में रहे आज़ादी।
मैं जान दूंगा मगर जेल को न छोडूंगा॥

असहयोग का तीर।

खटके शत्रु हृदय में हर दम, भैया असहयोग का तीर ॥टेक॥
कूद कूद कर अब तक खाया यहां पर हलुआ-खीर।
मुंह अब अपना सा ले बैठे फूट गई तकदीर॥ खटके॥ १॥
डरा रहे हैं बार बार वह दिखा दिखा शमशीर।
चुप्पी साधे हम भी बैठे बने हुए तसवीर॥ खटके॥ २॥
लल्लो चप्पो की नहीं आती हम पर अब तक़रीर।
सत्य कहें हम सत्याग्रही हैंगे मीर मुनीर॥ खटके॥ ३॥
ठूंस जेल में दिये बेगुनाह दिया कलेजा चीर।
भून दिये मासूम हजारों हो रह रह के पीर॥ खटके॥ ४॥
हालत सुन जलियान बाग की बहे नैन से नीर।
पड़ी लाश पर लाश तड़फती कौन बँधावे धीर॥ खटके॥ ५॥
नंगे कर के बाज़ारों में पीटे सेठ अमीर।
मार मार के बैंत फुलाये कोमल सकल शरीर॥ खटके॥ ६॥
सैनाव्रत होकर क्यों बैठे साधू-रंक-फकीर।
असहयोग रण में आकूदें सुमिर पीर, रघुबीर॥ खटके॥ ७॥

जहां तक बने वहां तक टालो पड़े अगर कुछ भीर।
सभो, शांति से स्वराज्य लें यह कायम करो नज़ीर ॥खटके॥८॥
उल्टी, सीधी खुफ़िया वाले भेज रहे तहरीर।
फंसा बेगुनाह दिये हजारों लड़ा लड़ा तदवीर ॥ खटके ।९॥
बाज़ वक्त तो रो रो पड़ते हो होकर दिलगीर।
कोरे कागज़ पर बेचारे खेंचा करें लकीर ॥ खटके ॥ १० ॥
राज कर्मचारी लख पड़ते हमको बहुत अधीर।
"शर्म्मा जलेसरी" आ पहुँचा अब इनका आख़ीर ॥
खटके शत्रु हृदय में हर दम भैया असहयोग का तीर ॥ ११ ॥

लन्दन थर २ कांप रह्यो।

थर २ कांप रह्यो सब लन्दन, सुन २ असहयोग की घोर ॥ टेक
बनी बात सब अँग्रेज़ों की डायर ने दी बोर।
भारत में बस असहयोग का बढ़ा तभी से ज़ोर ॥ थर २ ॥१॥
कर २ सभा आज लन्दन में मचा रहे हैं शोर।
होमरूल वह आज मांगते जो थे कल तक ढोर ॥ थर २ ॥२॥
जारी करें खूब भारत में हम क़ानून कठोर।
जेल भेजदो, मार लगाओ करदो इनका भोर ॥ थर २ ॥३॥
भारत सब को ऐसा प्यारा ज्यों प्रिय चन्द्र चकोर।
पक्षी मीठी बानी बोले दादुर, कोयल, मोर ॥ थर २ ॥४॥
डूब चुकी थी सब किश्ती कुछ चमक रही थी कोर ॥
मोहनदास मल्हा ने खींची असहयोग की डोर ॥ थर २ ॥५॥
नौकरशाही हिन्दुस्तानी फिरते मूंछ मरोर।

अपने रिश्तेदारों की खुद खोद रहे हैं गोर ॥ थर २॥६॥
आगा पीछा नहीं सोचते कुछ ऐसे आखोर।
उलट गया जब राज पाट फिर लेंगे खाक बटोर॥ थर२ ॥७॥
दिन में बन्दर डांका डालें, और रात में चोर।
बेईमान खुदगर्ज़ बढ़के हैं दोनों आखोर ॥ थर २ ॥ ८ ॥
मुँह से लगा हराम, हरामी बन कर फिरें चटोर।
होश उड़ रहे सुन पापिन के, असहयोग टनकोर ॥ थर २ ॥९॥
शाल दुशाले छिने रह गई फटी पुरानी खोर।
इसको भी अब छीना चाहें डाकू, रहज़न चोर ॥ थर २ ॥१०॥
कष्ट दे रहे तरह तरह के लगा २ कर जोर।
शर्मा जलेसरी आ पहुँची अन्यायन का ओर ॥ थर २ ॥११॥

इन गान्धी टोपीवालों ने।

इक लहर चला दी भारत में, इन गान्धी टोपीवालों ने।
'स्वाधीन बनो' यह सिखा दिया, इन गान्धी टोपीवालों ने॥
सदियों की गुलामी में फंसकर, अपने को भी जो भूल चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपीवालों ने॥
सर्वस्व देश हित करदो तुम, अर्पण—सुपूत हो माता के।
सर्वस्व त्याग का मंत्र दिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
अनहित में भारत माता के, जो लगे देश-द्रोही बन कर।
उनको सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
पट बन्द हुए कितनी मिल के, लंकाशायर भी चीख उठा।
चर्खे सा चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपीवालों ने॥

रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सर धुन बिललाते हैं।
खद्दर से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपीवालों ने॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण प्यारे हैं।
नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंज़ीर गुलामी की तोड़ो"।
माना गांधी का कहना यह, इन गांधी टोपीवालों ने॥
है विकट समस्या 'तीस की भी' उसको भी हल करना होगा।
ज़रिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपीवालों ने॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहिर को राजा, इन गांधी टोपीवालों ने॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके, स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपीवालों ने॥

नौजवान की तमन्ना

मुर्दा भारत को जिला जायँगे मरते मरते।
नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते॥
जुल्म करती है हिन्द पर नौकरशाही।
उसकी बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवांमर्दी से।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते॥
जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक़।

एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥
मातृभूमि के लिए जान निछावर करदें।
सबक भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते ॥
हैं तो नाचीज मगर इतनी जुर्रत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥
दत्त, भगत, दयानन्द, तिलक, गान्धी का।
सबको फ़रमान सुना जायेंगे मरते मरते ॥

शहीदों के खूं का असर

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे जालिम का घर देख लेना ॥
किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना ॥
झुकादेंगे गरदन को हम ज़ेर खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥
जो खुदगर्ज गोली चलाते हैं हम पर।
तो कदमों में उनका ही सर देख लेना ॥
जो नकश हमने खींचा है खूने ज़िगर से।
वह होगा कभी बारवर देख लेना ॥
किनारे पै आये भंवर से वह किश्ती।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥
बलायें ये जायगी खुद सर निगूं हो।
नहीं होगी इनकी गुज़र देख लेना ॥

खुज़द ही हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
छपेगी ये एक दिन खबर देख लेना॥

देख लेना

ज़ालिम! सितम गर करते रहोगे,
तो कुछ दिन में अपना फ़ना देख लेना।
इधर देख लेना उधर देख लेना,
कुछ दिन में यहां से कूच देख लेना॥
समय सन् ३० का आया हुआ है,
स्वराज्य लेने का बीड़ा उठाया हुआ है।
न रहने पायेंगे हिन्द में विदेशवासी,
भारतवासियों को स्वतंत्र देख लेना॥
ठूंसे जेल में लाल जो हमारे,
पिता भाई बन्धु देश के दुलारे॥
इज़्ज़त उनकी ख़राब करके तू,
अपनी भी मिट्टी ख़राब देख लेना॥
देश की ख़ातिर जो कुर्बान हो चुके हैं,
हुक्म उनके घरों में ताले पड़े हुये हैं।
बरबाद करके उनको ज़ालिम!
बरबादी तू अपनी भी देख लेना॥
तोप बन्दूकों से डरा कर के हमको,
जेलखाना व फांसी चढ़ा करके हमको।
पशुओं की मानिन्द जो तूने मारा,
बनेगी तेरी दुर्गति देख लेना।
हिन्द के टुकड़ों से तुम पल रहे हो,
यहीं के रुपये से धनी बने हुये हो।

सताया है हिन्दवासियों को तूने,
न चबने मिलें फिर चना देख लेना ॥
जो गुलामी की रस्सी से जकड़े हुये हैं,
जबां पै ताले हमारे पड़े हुए हैं।
यदि चलावेंगे हिन्दवासी स्वदेशी चर्खा,
तो हिन्द की गुलामी में लन्दन देखलेना ॥
भला कब तलक कटते मरते रहेंगे,
धन अपने देश का खोते रहेंगे।
गांधी के कहने को मंजूर करलो,
न माने तो झगड़ा ठना देख लेना ॥
झूंठे वायदे कब तलक करते रहोगे,
धोके चालाकी से काम लेते रहोगे।
समझ गए हैं अब हिन्दवासी,
हकूमत को अपनी मिटा देख लेना ॥
लगावेंगे अब हम क्रान्ति के नारे,
चमकेगी बिजली टूटेंगे तारे।
चलेगा असहयोग का अब खंजर दुधारा,
तो मिट्टी में मिला अपने को देख लेना ॥

फैसला अब तलवार से होगा

ज़ोर जिसको लगाना है ले वह लगा,
जान मैंने उधार मंगाई नहीं।
एक चप्पा जमीं का न दूंगा उन्हें,
और खजाने से दूं एक पाई नहीं ॥
एक दफा कह दिया दस दफा कह दिया,
कि वह भाई नहीं भाई भाई नहीं।

कौनसा दे दूं हिस्सा इन्हें बांट कर,
कोई जागीर इनकी दबाई नहीं ॥
मांग कर भीख अब तक गुजारा किया,
कभी रोटी कमा कर खाई नहीं।
आज हकदार वह बन गए राज्य के,
तुम्हें कहते हुए शर्म आई नहीं ॥
राज्य भी मांगने से मिला है कहीं,
तुम्हें इतना भी देता दिखाई नहीं।
दूत बन कर चले आये दरबार में,
किसी उस्ताद को दी पढ़ाई नहीं ॥
राज्य लेना है तो आयें सीधी तरह,
इन सन्देशों की अब यहां रसाई नहीं।
फैसला अब करेगी यह तलवार ही,
रोक सकती इसे अब खुदाई नहीं ॥
चाहे कितनी भी बातें बनाये कोई,
होगी हरगिज दिलों में सफ़ाई नहीं।
मेरे जीने पै लानत है ऐ कृष्णजी,
मैंने हस्ती जो उनकी मिटाई नहीं ॥

शहीद गर्जना

[ले०—काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल]

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह जमाना ॥
खूं खौलने लगा है हिंदोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना ॥
क़ौमी तिरंगे झन्डे पर जां निसार अपनी।

हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की प्यारो।
इक खेल होरहा है फांसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

वीर गर्जना

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ॥
मत बुज़दिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वतन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥
दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।
वालंटियर बनो तुम सब छोड़दो बहाना ॥
दिल में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना ॥
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा।
दो दिन की ज़िन्दगी है इसका नहीं ठिकाना ॥

मुद्रक-चन्द्रभानु शर्मा, लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, कचहरीघाट, आगरा.